Subject :- Sociology Date :- 04/05/2020
Class :- D-II (H) Paper :- IIIrd & Subsidiary
Topic :- नारियों की समस्या हेतु सुझाव
By :- Dr. Shyamanand Choudhary Guest Teacher
Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No:- (67)

नारियों की समस्या दूर करने हेतु सुझाव

विषय प्रवेश → नारी की समस्याएँ बहुत गहराई से भारतीय सामाजिक संरचना से जुड़ी हुई हैं। पितृसत्तात्मक और पुरुष प्रधान समाज में जब तक संरचनात्मक परिवर्तन नहीं किए जायेंगे, तब तक नारी की समस्याओं में बहुत अधिक कमी आने की आशा नहीं रखी जा सकती है। सरकार ने नारियों की समस्याओं के निराकरण और उनके हितों के साथ अनेक अधिनियम पारित किया है किंतु सभी कानून संसद के पुस्तकालय में पवित्र दस्तावेज के रूप में सजे हुए दिखाई पड़ते हैं क्योंकि उनका क्रियान्वयन इरी निष्ठा के साथ नहीं किया गया है। एक दैनिक समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' 27 अक्टूबर 2006 की संपादकीय नोट में सम्पादक ने भी लिखा है कि "कानून के सहारे जमीनी हकीकत को बदलने के लिए जिस मानसिकता और जिस मशीनरी की जरूरत होती है, उसके अभाव में बहुत से कानून महज किताबों की शोभा बढ़ाने भर के ही लायक रह जाते हैं।"

पुरुषों के शोषण और अत्याचार से महिलाओं को मुक्ति दिलाने के सारे प्रयास तबतक अधूरे हैं जब तक उन्हें वास्तविक जमीन पर उतार न दिया जाय। साथ ही जबतक शक्तिशाली जनाधार तैयार नहीं किया जायेगा तब तक नारी की स्थिति को ऊपर नहीं उठाया जा सकता। अभी वर्ष पूर्व राजस्थान में खुलेआम सती कांड होना और उसके समर्थन में राजपूत जाति के कुछ लोगों का आंदोलन करना तथा जगद्गुरु शंकराचार्य जैसी पद से धर्म के नाम पर सती का पक्ष पोषण होना इस बात का सबूत है कि नारी की स्थिति में कोई अपेक्षित परिवर्तन नहीं हो पाया है।

निराकरण के लिए सुझाव → महिलाओं की समस्या के लिए निम्नलिखित सुझाव लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं:-

(1) वैधानिक सुधार → महिला संगठनों की सहभागिता व सलाह से नारी संबन्धी एक भारतीय महिला अधिनियम पारित हो जो विवाह, उत्तराधिकार, सम्पत्ति, यौन, संतानोत्पत्ति आदि विषयों पर स्पष्ट आदेश प्रदान करें। भारत की प्रत्येक वयस्क नारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी धर्म, जाति, समुदाय के भेदभाव के अपेक्षित इस अधिनियम को ग्रहण कर सकती हैं एवं इसका लाभ उठा सकती है।

(2) शिक्षा का प्रसार → नारी शिक्षा न केवल अनिवार्य की जाय वरन् निर्धन परिवारों की कन्याओं को छात्रवृत्तियाँ भी दी जाय। नारी छात्रावास की व्यवस्था की जाय। इस शिक्षा का आधुनिक अर्थों में व्यावसायीकरण किया जाना चाहिए। स्कूलों के साथ साथ एक उत्पादन केन्द्र भी हो तो और भी अच्छा हैं। नारी शिक्षा का उद्देश्य नारी को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए।

(3) रोजगार एवं स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहन → नारियों में अधिक से अधिक रोजगार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए सरकार को आरक्षण व सुरक्षात्मक

Scanned with CamScanner

भेदभाव की नीति अपनानी चाहिए। नारियों को वे सब सुविधाएँ मिलनी चाहिए जो पिछड़े वर्गों या अनुसूचित जातियों व जनजातियों को मिल रही हैं।

(4) मातृत्व का मौलिक अधिकार → प्रत्येक नारी को मातृत्व का मौलिक अधिकार मिले, चाहे वह विवाहित दायरे में हो या उससे बाहर। यह उसका नैसर्गिक अधिकार है, इसे संवैधानिक किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, इसे निरपेक्ष रूप से दैहिक अधिकार भी प्राप्त होनी चाहिए। उसकी देह पर उसे ही स्वामित्व मिले। किसी अन्य को चाहे वह कोई भी हो, उसकी इच्छा के विरुद्ध नारी के दैहिक उपयोग का अधिकार नहीं है।

(5) नारी संगठनों को प्रोत्साहन एवं सहायता → नारियों को स्थानीय स्तर पर अपने संगठन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ~~उनके~~ उनके संगठनों की सहायता कि जानी चाहिए।

(6) प्रतीकों के विरुद्ध मोर्चा → लिंग भेदभाव प्रतीकात्मक स्तर पर गहराई से अस्तित्व रखता है इसके अनेक उदाहरण हैं – जैसे- नारी के नाम से पहले कुमारी या श्रीमती लिखने की बाध्यता, विवाहित नारी के लिए सिंदूर, चूड़ियों, बिछुए एवं मंगलसूत्र की अनिवार्यता, विवाहित नारियों का पति और पुत्र के लिए व्रत रखने की अनिवार्यता आदि। इसके विरुद्ध अभियान चलाना चाहिए एवं इन सामंतवादी या आदिकालीन अवशेषों को समाप्त किया जाना चाहिए।

अंत में, स्वयं नारी को ही अकेले और सामूहिक रूप से अपनी समस्याओं का हल खोजना होगा। कोई किसी को उनके अधिकार नहीं दिला सकता। अपने अधिकार खुद लेने पड़ते हैं और उनकी रक्षा करनी पड़ती है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U

Scanned with CamScanner